भारतीय एवं आग्नेय एशिया के रामकथाश्रित साहित्य में सीता-परित्याग के कारण

- बिमलेश कुमार मौर्य©

bimaleshbhu78@gmai.com

की-वर्ड्स – Resons of Seeta-parityag, Seeta-parityag in Indian and South Asian Literature, Valmiki and his Ramayan, Ram-katha and applied literature. Ram-katha in Indian and south Asian Literature.

सार संक्षेप

वाल्मीकिरामायण से प्रवर्तित रामकथा अपनी भव्यता और लोकोपादेयता के कारण भारत से इतर देशों में भी उसी प्रकार स्वीकृत और प्रचलित हुई जिस प्रकार यह अपनी जन्मभूमि में। बृहत्तर भारत के अंगभूत और वर्तमान स्वतंत्र एशियाइ देशों में रामकथा का प्रसार सदियों पूर्व हो चुका था और तत्सम्बन्धी साहित्य अपने विविध रूपों में संरक्षित और सवंर्धित भी हो चुके थे। दक्षिण एशिया के विविध रामकथा-परक साहित्य के अनुशीलन के विना रामकथा का सांगोपांग विवेचन हमेशा से अपूर्ण समझा जाता रहा है।

रामकथा में 'सीता-परित्याग' एक महत्त्वपूर्ण, आकर्षण का केन्द्र और विवादास्पद विषय है और इस पर भी सदियों से समीक्षकों की लेखनी और बुद्धि एक साथ चलती आई है। वर्त्तमान नारी-जागरण के युग में यह विषय कुछ और भी गंभीर हो चला है और इस ओर वैज्ञानिक तथा तार्किक दृष्टि के साथ सम्बन्धित कथा तथा उसके तथ्यों का विवेचन जारी है। यहाँ यह सूचित कर देना उचित होगा कि सीता-परित्याग का दंश वर्तमान बुद्धिजीवी समाज को ही नहीं सताता अपितु सदियों से यह मानव-मन को सालता रहा है और यही कारण है कि न केवल भारतीय रामकथा-साहित्य में अपितु दक्षिण-एशियाइ देशों के रामकथा-साहित्य में भी सीता-परित्याग के कारणों को कई तार्किक और वैज्ञानिक भावभूमि प्रदान किए गए।

सीता-परित्याग के कारणों का एकत्र संकलन बहुत ही विरल है। 'वाल्मीकिरामायण और रामकीर्तिमहाकाव्य' पर शोधकार्य कर रहे प्रस्तुत शोध-आलेख के प्रस्तोता ने 'प्रज्ञकीर्ति' के अनुरोध पर सीता-परित्याग के कारणों का संकलन एकत्रित कर सम्बन्धित विषय को एक बहुमूल्य योगदान दिया है।

यह रामकथा की लोक-स्वीकृति का चरम निदर्शन ही है कि वाल्मीकिरामायण से प्रारम्भ हुई रामकथा युगान्तर की लोकचेतना एवं लोकधर्मिता से सम्बन्धित बदलाव को अपने भीतर समेटती, युग-सापेक्ष कतिपय मौलिकता को धारित करती, सम्पूर्ण धरा पर अक्षुण्ण गति से कीर्तिमान रही है, निरन्तर हो रही है। रामकथा के एशियाई देशों में प्रचार-प्रसार तथा पुनर्लेखन के सन्दर्भों में यह उल्लेखनीय तथ्य है कि यह कथा भारत के सन्दर्भों में 'मर्यादापुरुषोत्तम' तथा 'प्रजापालक' राम के आदर्श चरित से ओत-प्रोत है, जबकि भारत से भिन्न देशों

© जूनियर रिसर्च फेलो, संस्कृत विभाग, कला सङ्काय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी.

में राम का यह आदर्श चरित्र देखने को नहीं मिलता। विषयोपस्थापन के मूल्य पर यहाँ इस बात की चर्चा कर देना उचित प्रतीत होता है कि वाल्मीकिरामायण के अतिरिक्त विमलसूरि-कृत पउमचरियं, रविषेण-कृत पद्मचरित, सोमदेव-कृत कथासरितसागर, हरिभद्रसूरि-कृत उपदेशपद, भद्रेश्वर-कृत कहावली आदि के रूप में रामकथा परक प्रसिद्ध साहित्य-ग्रन्थ हैं जिनमें राम के उपर्युक्त चरित-गत वैशिष्ट्य का निदर्शन प्राप्त होता है।

यहाँ यह भी स्मरण में रखना उचित होगा कि आग्नेय एशिया को ही दक्षिण-पूर्व एशिया भी कहा जाता है। दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों में हिन्देशिया, जावा, इण्डोनेशिया, मलयेशिया, कम्बोडिया, थाईलैण्ड, लाओस तथा बर्मा आदि देश आते हैं। वाल्कीकिरामायण की जनकल्याणकारी और नैतिक रामकथा-परक प्रसंगों ने इन देशों के रचनाधर्मियों को अपनी ओर आकृष्ट किया और विविध प्रकार के काव्य-ग्रन्थों का प्रणयन इन देशों में सम्पन्न हुआ। इन देशों में प्रणीत रामकथा भारतीय रामकथा से कई विषयों में अंशतः भिन्न है किन्तु इन भिन्नताओं के बावजूद कहीं न कहीं इनकी मूलकथा पर वाल्मीकिरामायण का प्रभाव स्पष्टतः परिलक्षित होता है और इसमें जो भिन्नता दिखलाई देती है वह वहाँ की भौगोलिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक तथा सभ्यतागत कारणों पर आश्रित है।

आग्नेय एशिया में रामकथा के प्रचार का मूल कारण- 'प्राचीन काल से ही भारत के तटवर्ती प्रदेशों से आग्नेय एशिया में व्यापार, जीविकोपार्जन तथा धर्मप्रचार हेतु की जाने वाली यात्राएँ' हैं। भारतीय रामकथा-परक साहित्य यात्रियों द्वारा समय-समय पर दक्षिण-पूर्व एशिया के निवासियों के मध्य प्रचारित होता रहा। विदेशों में रामकथा के तत्त्वों के निर्यात का मार्ग कभी अवरुद्ध नहीं हुआ।

यह आश्चर्य का विषय है कि आग्नेय एशिया में धार्मिक तथा सांस्कृतिक विषमताओं के बावज़ूद भारतीय रामकथा वहाँ की भौगोलिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों के अनुरूप अपना स्वतन्त्र स्वरूप ग्रहण करती रही, पुष्पित तथा पल्लवित होती रही। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि आग्नेय एशिया में रामकथा वहाँ के इतिहास तथा धर्म सम्बन्धी विषमताओं में सांस्कृतिक ऐक्य तथा समन्वय की स्थापना करती आयी है। यह देश-विशेष के जातीय जीवन में रमकर वहाँ की राष्ट्रिय कथा के रूप में समादृत होती रही है।

रामकथा के विदेशों में प्रचार एवं प्रसार की चर्चा के इस प्रसंग में यह ध्यातव्य है कि इण्डोनेशिया से बर्मा तक फैली रामकथा के विकास में कालक्रम का स्पष्ट विवरण देना सहज नहीं, किन्तु इन देशों में रामकथा के शताधिक प्रसंग तथा उनके रूपान्तरण की प्राप्ति हमें इन देशों में रामकथा के विकास, प्रचार तथा प्रसार के सूत्र अवश्य उपलब्ध कराती है।

'वाल्मीकिरामायण' से प्रसूत रामकथा के आधार पर आग्नेय एशिया में जिन रामकथाश्रित ग्रन्थों का निर्माण हुआ उनका इदमित्थं विवरण प्रस्तुत करना कठिन है। इस प्रसंग में हम केवल उन ग्रन्थों का निर्देश कर

रहे हैं जिनका विवरण इस शोध-पत्र के केन्द्रीय विषय (सीता-परित्याग के कारण) के निरूपण हेतु किया गया है। ये ग्रन्थ निम्नवत् हैं- हिन्देशिया का 'सेरीराम', जावा का सेरतकाण्ड, मलयेशिया का हिकायत महाराज रावण, थाईलैण्ड का रामकिएन, कम्बोडिया का रामकेर्त्ति तथा बर्मा का रामवत्थु। यहाँ प्रथम ही इस तथ्य का उल्लेख कर देना उचित होगा कि इन ग्रन्थों की रामकथा में पात्रों एवं भौगोलिक की भिन्नता होने के कारण भारतीय कथानक के सन्दर्भों में भिन्नता दृष्टिगोचर होती है।

1. भारतीय रामकथाश्रित साहित्य में सीता-परित्याग के कारण

वाल्मीकिरामायण के उत्तरकाण्ड के अनुसार, 'गर्भवती सीता एक दिन राम के सामने तपोवन देखने की इच्छा प्रकट करती हैं। राम उन्हें अगले दिन तपोवन भेज देने का वचन देकर अपने मित्रों के साथ परिहास-कथा सुनने लगते हैं। संयोगवश राम भद्र से पूछते हैं कि मेरे, सीता तथा भरत आदि के विषय में प्रजा का क्या दृष्टिकोण है? तब सीता-चरित्र सम्बन्धी लोकापवाद एवं धोबी की घटना से इसके बढ़ते प्रभाव का उल्लेख करते हुए भद्र कहता है कि "हमको भी अपनी स्त्रियों का ऐसा आचरण सहन करना होगा।" मूल विवरण निम्नवत् है -

हत्वा च रावणं संख्ये सीतामाहृत्य राघवः।

अमर्षं पृष्ठतः कृत्वा स्ववेश्म पुनरानयत्।।

अस्माकमपि दारेषु सहनीयं भविष्यति।

यथा हि कुरुते राजा प्रजास्तमनुवर्त्तते।।[1]

यह सुनकर राम, लक्ष्मण को बुलाते हैं और सीता को गंगा के उस पार छोड़ देने का आदेश देते हैं। लक्ष्मण तपोवन दिखलाने के बहाने सीता को रथ पर ले जाते हैं और वाल्मीकि के आश्रम के समीप छोड़ देते हैं।

महाकवि कालिदास-कृत रघुवंशमहाकाव्य के चौदहवें सर्ग में सीता-परित्याग का कारण उपर्युक्त इसी स्रोत का अनुगमन करता है –

निर्बन्धपृष्टः स जगाद् सर्वं स्तुवन्ति पौराश्चरितं त्वदीयम्।

अन्यत्र रक्षोभवनोषितायाः परिग्रहान्मानवदेव देव्याः।।[2]

[1] वाल्मीकिरामायण ७.४३.१६.१९.
[2] रघुवंशमहाकाव्य १४/३२.

महाकवि भवभूति-कृत उत्तररामचरित के प्रथम अंक में जनता में प्रवर्तित सीता-चरित्र सम्बन्धी लोकापवाद के कारण ही सीता-परित्याग के कारण का वर्णन प्राप्त होता है –

हा हा धिक् परगृहवासदूषणं यद्वैदेह्याः प्रशमितमद्भुतैरुपायैः।

एतत्तत्पुनरपि दैवदुर्विपाकादालर्कं विषमिव सर्वतः प्रसृप्तम्।।[3]

महाकवि दिङ्नाग विरचित कुन्दमाला के छठें अंक में स्वभाव से पवित्र सीता के लोक निन्दा के कारण परित्याग का उल्लेख किया गया है –

या स्वयं प्रकृतिनिर्मला सती छाद्यतेऽन्यजनवादवारिदैः।

जानकी भगवति त्वयाद्य सा चन्द्रिकेव शरदा विशोधिता।।[4]

रामकथा के सन्दर्भ में जैन-परम्परा का साहित्य पारम्परिक रामकथा-साहित्य से कुछ अंशों में अलग है और इसमें घटना तथा पात्रों के आधार पर कुछ विभेद दिखलाई पड़ते हैं। विमलसूरि-कृत **पउमचरियं** के अनुसार राम स्वयं गर्भवती सीता को वन में विभिन्न चैत्यालय दिखला रहे थे, उसी समय राजधानी के नागरिक उनके पास आये और अभयदान पाकर उन्होंने अपने आने का कारण बताया। सर्वप्रथम वे साधारण जनता के दुष्ट स्वभाव का वर्णन करते हुए कहते हैं कि "ऐसी जनता में सीता के लोकापवाद को छोड़कर किसी अन्य बात की चर्चा ही नहीं होती है –

जल्पति पुनः पुनरेव यथा सीता राक्षसानां नाथेन।
हृत्वा परिभुक्तेहानीता तथापि रामेण।।
उद्यानेषु गृहेषु च तडागवापीषु जनपदः स्वामिन्।
सीतापवादकथां मुक्त्वा न जल्पतेऽन्यत्।।
दशरथनृपस्य पुत्रो रामस्त्रिसमुद्रमेदिनीनाथः।
लंकाधिपेन हृतां कथं पुनरायति जनकसुताम्।।
नूनं नात्र दोषः परपुरुषप्रसक्ताया महिलायाः।
येनायं पद्माभः सीतां धारयति निजगृहे।।[5]

[3] उत्तररामचरित १/४०.
[4] कुन्दमाला ६/३७.
[5] पउमचरियं ९३/२४-२७.

नागरिकों की बात सुनकर राम ने लक्ष्मण से परामर्श किया, किन्तु लक्ष्मण ने सीता-त्याग का विरोध किया। राम को सीता पर संदेह हुआ, अतः उन्होंने अपने सेनापति कृतान्तवदन को बुलाकर आदेश दिया कि मन्दिर दिखलाने के बहाने सीता को गंगा के पार भयानक वन में छोड़ दो। सेनापति ने ऐसा ही किया।

रविषेण-कृत **पद्मचरित** में रावणवध के उपरान्त राम द्वारा सीता को ग्रहण करने से प्रजा में उत्पन्न लोकापवाद पर विशेष चर्चा की गई है। इस रूप में देखें तो पद्मचरित में भी सीता-परित्याग का मुख्य कारण चरित्र सम्बन्धी लोकापवाद ही है –

विज्ञाप्यं श्रूयतां नाथ पद्मनाभ नरोत्तम।
प्रजाऽधुनाखिला जाता मर्यादारहितात्मिका।।
स्वभावादेव लोकोऽयं महाकुटिलमानसः।
प्रकटं प्राप्य दृष्टान्तं न किंचितस्य दुष्करम्।।[6]

'पद्मचरित' में सीता-परित्याग सम्बन्धी घटना के सन्दर्भ में यहाँ उल्लेखनीय है कि इस महाकाव्य में सीता-परित्याग के सम्बन्ध में कितनी ही नवीन घटनाओं को जोड़ा गया है। कुछ जैनी रामायण और अन्य रामायणों की कथा को मिलाकर एक प्रकार की नवीन कथा बनायी गयी है। यहाँ धोबी के वृत्तान्त को भी जोड़ दिया है जिसमें वह अपनी पत्नी को पुनः स्वीकार करने से विमुख होता होता हुआ कहता है कि 'मैं राम की तरह नहीं हूँ, जिन्होंने चिरकाल तक रावण के घर में रहने के पश्चात् भी सीता को ग्रहण कर लिया।'

सोमदेव-कृत **कथासरित्सागर** के अनुसार, लंका से लौटने के पश्चात् राम ने एक दिन अपने नगर में गुप्तवेश में घूमते हुए देखा कि एक पुरुष अपनी पत्नी को हाथ से पकड़कर अपने घर से बाहर निकाल रहा है और यह दोष दे रहा है कि तुम दूसरे के घर गयी थी। इस पर उसकी पत्नी कहती है कि "राम ने सीता को राक्षस के घर रहने पर भी नहीं छोड़ा, यह मेरा पति राम से भी बढ़कर है, क्योंकि यह मुझे बन्धु के घर जाने पर ही अपने घर से निकाल रहा है" -

हस्ते गृहित्वा गृहिणीं निरस्यन्तं निजाद् गृहात्।
परस्येयं गृहमगादिति दोषानुकीर्त्तनात्।।
रक्षोगृहोषिता सीता रामदेवेन नोज्झिता।
अयमभ्यधिको यो मामुज्झति ज्ञातिवेश्मगाम्।।

[6] पद्मचरित, ९६/४०-४२.

इति तद् गृहिणीं तां च ब्रुवतीं तं निजं पतिम्।
रामो राजा स शुश्राव खिन्नश्चाभ्यन्तरं ययौ।
लोकापवादभीतश्च सीतां तत्याज तां वने।
सहते विरहक्लेशं यशस्वी नायशः पुनः।।[7]

यहाँ स्पष्ट उल्लेख किया गया कि उपर्युक्त स्त्री की बात सुनकर राम को बहुत दुःख हुआ और उन्होंने केवल लोकापवाद एवं जनकल्याण के भय से गर्भवती सीता को वन में छोड़ दिया।

हरिभद्रसूरि-कृत **उपदेशपद** के गाथा संख्या-१४ में सीता द्वारा रावण के पैरों का चित्र बनाने का संकेत मात्र किया गया है। उपदेशपद के टीकाकार मुनिचद्रसूरि के अनुसार, सीता ने अपनी ईर्ष्यालु सपत्नी की प्रेरणा से रावण के चरणों का चित्र बनाया। सपत्नी ने राम को वह चित्र दिखाया। फलस्वरूप राम ने सीता का परित्याग कर दिया।[8]

भद्रेश्वर-कृत **कहावली** के अनुसार, सीता के गर्भवती होने पर उनकी सपत्नीजनों की ईर्ष्या बहुत बढ़ गयी। उनके छद्म-अनुरोध पर सीता ने रावण के पैरों का चित्र बनाया। इस पर सपत्नियों ने राम के पास जाकर सीता पर यह अभियोग लगाया कि सीता सदा रावण का स्मरण किया करती है और उन्होंने प्रमाण के रूप में रावण का वह चित्र दिखाया। राम ने उनके इस अभियोग पर अधिक ध्यान नहीं दिया जिसके कारण सपत्नियों ने रावण-चित्र की कथा दासियों द्वारा जनता में फैला दी। वसन्त के आगमन पर सीता ने देवपूजा करने का दोहद प्रकट किया। बाद में राम गुप्तवेश धारण कर नगर के उद्यान में टहलने गये और वहाँ उन्होंने लंका निवास के पश्चात् सीता को ग्रहण करने के कारण अपनी निन्दा सुनी। उन्होंने लक्ष्मण, सुग्रीव, विभीषण, हनुमान् आदि को बुलाकर गुप्तचरों को आज्ञा दी, कि तुम लोगों ने जो कुछ सुना है उसका निस्संकोच विवरण दो। गुप्तचरों ने लोकापवाद की चर्चा की। यह सुनकर लक्ष्मण को अत्यन्त क्रोध आया, किन्तु राम ने गुप्तचरों का समर्थन करते हुए अपने अनुभव का भी वर्णन किया। लक्ष्मण ने सीता का पक्ष लिया, किन्तु राम ने कृतान्तवदन को आदेश दिया कि वह तीर्थयात्रा के बहाने सीता को वन में छोड़ दें।[9]

जैनरामायण के अनुसार भद्रेश्वर-कृत 'कहावली' की कथा कुछ परिवर्तित रूप में प्राप्त होती है। सीता के गर्भवती होने के बाद राम की तीन पत्नियाँ उनसे पहले से अधिक ईर्ष्या करने लगीं। रावण के चित्र-निर्माण सम्बन्धी इन तीनों के अनुरोध से विवश होकर सीता ने कहा कि "मैंने रावण की ओर कभी दृष्टिपात नहीं किया"

[7] कथासरित्सागर ९.१./६७-७०.
[8] उपदेशपद संग्रह, पृ.-१४५.
[9] रामायणमीमांसा पृ.-६४३.

फलस्वरूप सीता ने रावण के पैरों का ही चित्र बनाया। सपत्नियों ने राम को वह चित्र दिखलाया और उसके सन्दर्भ में प्रवाद दासियों द्वारा जनता में फैला दिया। इसके पश्चात् नागरिकों ने राम के पास आकर सीता के विषय में लोकापवाद की चर्चा की। उसी रात राम गुप्तवेश धारण कर नगर घूमने गये और उन्होंने सीता के कारण अपनी निन्दा सुनी। फलस्वरूप उन्होंने अगले दिन सीता को वन में छोड़ देने का आदेश दे दिया।[10]

देवविजयगणि के 'जैनरामायण' में स्त्रियाँ राम से कहती हैं -"सीता रावण के चरणों की पूजा करती है"-

स्वामिन् एषा सीता रावणे मोहिता।

रावणाङ्घ्रिं भूमौ लिखित्वा पुष्पादिभिः पूजयति।।[11]

कश्मीरी रामायण की कथा कुछ अन्य भी मिथक प्रस्तुत करती है। इसके अनुसार राम की एक सहोदरी बहन का उल्लेख किया गया है। लोकगीतों में भी सीता की ननद उनसे रावण का चित्र बनवाती है।[12]

कृत्तिवास रामायण में सीता-परित्याग के तीनों कारणों का समन्वय प्राप्त होता है- भद्र से लोकापवाद की चर्चा सुनकर राम सरोवर में स्नान करने गये, मार्ग में उन्होंने धोबी के मुँह से अपनी निन्दा सुनी तथा घर पहुँचकर सीता द्वारा अंकित रावण का चित्र देखा। सीता की सखियों ने जिज्ञासा से प्रेरित होकर सीता से रावण का चित्र बनाने का अनुरोध किया था। सीता ने फर्श पर रावण का चित्र बना दिया और बाद में थक कर उस चित्र के पास सो गई। राम के आगमन के पूर्व ही सखियाँ चलीं गईं तथा रावण का चित्र देखकर राम का संदेह और दृढ़ हो गया। फलस्वरूप राम सीता को त्याग देने का संकल्प करके चले गये।[13]

मसीही रामायण के अनुसार, राम की बहनें सीता से दशमुख का चित्र अंकित करवाती हैं और राम से कहती हैं कि सीता रात-दिन इस चित्र की पूजा करती है। फलस्वरूप राम को सीता पर संदेह हुआ और उन्होंने जनता के मत का पता लगाने के लिए लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न को भेजा। वे दोनों लौटकर राम को धोबी का प्रसंग सुनाते हैं। फलतः राम ने सीता का परित्याग कर दिया।[14]

---

[10] जैनरामायण, पृष्ठ : १०७-११०.

[11] रामकथा, पृ.-५५८, सन्दर्भ सं.-१.

[12] ब्रजलोक साहित्य का अध्ययन पृ.-१३७, भोजपुरी लोकगीत पृ.-२७, रामकथा, पृ.-५५८ में उद्धृत.

[13] रामकथा, पृ.-५५८.

[14] रामकथा, पृ.-५५८.

२. आग्नेय एशिया के रामकथाश्रित साहित्य में सीता-परित्याग के कारण-

हिन्देशिया में प्रचलित रामकथा-परक ग्रन्थ **सेरीराम** के अनुसार कीकवी भरत और शत्रुघ्न की सहोदरी बहन थी। उसके अनुरोध से सीता ने एक पंखे पर रावण का चित्र खींच दिया। कीकवी ने सोई हुई सीता के ऊपर चित्र रख दिया तथा सीता पर यह अभियोग लगाया कि सोने से पूर्व सीता ने उस चित्र का चुम्बन भी किया था। फलस्वरूप राम ने कीकवी की बातों पर विश्वास कर सीता को अपने घर से निकाल दिया।[15]

जावा के **सेरतकाण्ड** तथा **आनन्द रामायण** के अनुसार कैकेयी सीता से रावण का चित्र अंकित करने का आग्रह करती है। सीता कहती हैं कि "मैनें केवल उसके दाहिने पैर का अँगूठा ही देखा था" और अँगूठे का चित्र बना दिया। कैकेयी इसी के आधार पर रावण का पूरा चित्र बनवाती है और राम को बुलाकर स्त्री-चरित्र की आलोचना करती हुई कहती है –

यत्र यत्र मनोलग्नं स्मर्यते हृदि तत्सदा।
स्त्रियाश्चरित्रं को वेत्ति शिवाद्या मोहिताः स्त्रिया।।[16]

यह सुनकर राम कैकेयी को विश्वास दिलाते हैं कि लक्ष्मण कल सीता को वन में छोड़ देंगे और उसकी दाहिनी भुजा काटकर अयोध्या ले आयेंगे, क्योंकि उसी से सीता ने रावण का चित्र बनाया होगा।[17]

तिब्बती रामायण के अनुसार राम किसी व्यभिचारिणी स्त्री का और उसके पति का झगड़ा सुनते हैं। पति कहता है कि "तुम अन्य स्त्रियों के समान नहीं हो।" इस पर स्त्री कहती है कि "तुम स्त्रियों के विषय में क्या जानों? सीता को ही देख लो, वह एक लाख वर्ष तक दशग्रीव के साथ रही, फिर भी राम ने उसे ग्रहण कर लिया।" राम छिपकर उस व्यभिचारिणी स्त्री से मिलते हैं। उसकी बात सुनकर राम की शंका और सुदृढ़ हो जाती है और वे सीता को वन में भेज देते हैं।[18]

मलयेशिया के **हिकायत महाराज रावण** के अनुसार रावणवध के बाद राम सात महीने तक लंका में रहे। रावण की एक पुत्री अपने पिता का एक चित्र सोयी हुई सीता के ऊपर रख देती है। सीता नींद में उस चित्र का चुम्बन कर लेतीं हैं। उसी समय राम उनके पास आते हैं और उस दृश्य को देखकर क्रोध से सीता को कोड़ों से मारकर उसके बाल काट देते हैं और लक्ष्मण को बुलाकर आदेश देते हैं कि सीता को मारकर प्रमाणस्वरूप उसका

---

[15] रामायणमीमांसा पृ.-६४३.
[16] आनन्द रामायण ३/४६.
[17] रामकथा, पृ.-५५९.
[18] रामायणमीमांसा पृ.-६४२.

हृदय लाकर दो, परन्तु लक्ष्मण सीता को उनके पिता के घर पहुँचा देते हैं और बकरी का हृदय लाकर राम को विश्वास दिलाते हैं कि सीता को मार दिया गया।[19]

सिंहलद्वीप की **रामकथा** के अनुसार, उमा सीता के पास आकर उनसे केले के पत्ते पर रावण का चित्र अंकित करवाती है। उसी समय अचानक राम के उन दोनों के पास आने पर सीता उस चित्र को पलंग के नीचे छिपा देती हैं। राम उस पलंग पर बैठते हैं और पलंग काँपने लगता है। कारण का पता लगाकर राम अत्यन्त क्रुद्ध हो जाते हैं और लक्ष्मण को सीता की हत्या करने की आज्ञा देते हैं। लक्ष्मण वन में अपना खड्ग किसी पशु के रक्त से रंगकर आते हैं और राम को विश्वास दिलाते हैं कि सीता की मृत्यु हो गयी।[20]

कम्बोडिया के **रामकेर्त्ति** (सर्ग-७५) के अनुसार रावण की कुटुम्बिनी राक्षसी सीता की सखी का रूप धारणकर रावण का चित्र अंकित करवाती है और स्वयं उस चित्र में प्रविष्ट हो जाती है। फलतः सीता के प्रयत्न करने पर भी उस चित्र को मिटा नहीं पाती और निराश होकर उसे पलंग के नीचे छिपा देती हैं। कुछ समय बाद राम उस पलंग पर लेटते हैं तो उन्हें तीव्र ज्वर का अनुभव होता है। तत्पश्चात् चित्र का पता लगने पर राम लक्ष्मण से सीता को मारकर उसका कलेजा लाने का आदेश देते हैं। लक्ष्मण वन में सीता के ऊपर खड्ग चलाते हैं, परन्तु खड्ग फूलों की माला बन जाता है। तत्पश्चात् इन्द्र मृग का रूप धारण कर लक्ष्मण के सामने मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं। फलस्वरूप लक्ष्मण उनका कलेजा निकालकर राम को लाकर देते हैं। लक्ष्मण के चले जाने के बाद इन्द्र पुनः भैंसे का रूप धारणकर सीता को वाल्मीकि के आश्रम में ले जाते हैं।[21]

थाईलैण्ड के **रामकिएन** (अध्याय-४०) के अनुसार, अतुला नामक शूर्पणखा की पुत्री अपनी माता के अपमान का प्रतिशोध लेने के लिए सीता से मित्रता करती है और रावण का चित्र अंकित करवाती है।[22] स्नान हेतु गये राम को आते देखकर अतुला उसी चित्र में प्रविष्ट हो जाती है। सीता उस चित्र को मिटाने में असमर्थ हो जाती हैं और उस चित्र को पलंग के नीचे छिपा देती है। पलंग पर लेटते ही राम को उच्च ज्वर होता है। कारण

---

[19] रामायणमीमांसा पृ.-६४४.

[20] रामकथा, पृ.-५५९.

[21] रामकथा, पृ.-५६०.

[22] दिने ह्येकस्मिन्सा ननु कृतककिंकर्यतिशठा बभाषे देव्यासीर्दशवदनहर्म्ये त्वमुषिता।
कथंरूपा तस्याकृतिरिति वद त्वं महदहो ममास्त्यत्रौत्सुक्यं प्रशमय ततस्त्वं विलिख तम्॥ (श्रीरामकीर्ति.२०/१६)

जानने के लिए लक्ष्मण को बुलाते हैं। चित्र मिलने पर राम सीता के प्रति क्रोध करते हुए मार डालने का आदेश देते हैं –

नहि प्रत्ययमादधात् प्रभू रघुवश्यो जनकात्मजागिरि।

वधमेव समादिदेश च सुतरां कोपवशं समागतः।।[23]

उपसंहार

इस प्रकार भारतीय एवं आग्नेय एशिया के रामकथाश्रित साहित्य में सीता-परित्याग के कारण अपने मूल रूप में प्रस्तुत हुए हैं। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि भारतीय साहित्य में जहाँ सीता-परित्याग का मूल कारण 'धोबी एवं लोकापवाद' है वहीं आग्नेय एशिया के साहित्य में सीता-परित्याग का प्रायः मूल कारण 'सीता द्वारा रावण के पैरों का चित्र बनाया जाना' है जिसके पीछे किसी न किसी प्रकार का षड्यन्त्र (चाहे वह सपत्नियों का हो, राम की बहन का हो, सीता की सखियों का हो, रावण की कुटुम्बिनियों का हो अथवा सूर्पणखा की पुत्री का हो) कारण रहा है। आग्नेय एशिया के साहित्य में सीता-परित्याग के कारणों के सन्दर्भ में यह भी ध्यान में रखने योग्य तथ्य है कि यद्यपि इसका कारण सीता द्वारा निर्मित रावण-चरण-चित्र है तथापि इसका जो परिणाम (परित्याग) प्रत्यक्ष होता है वह भारत की मूल कथा का ही परोक्ष अनुगमन करता है अर्थात् 'लोकापवाद' और 'सीता-चरित्र।'

सीता-परित्याग की उपर्युक्त कथाओं में बहुत अन्तर पाया जाता है, परन्तु इस कथानक के विकास की रूप रेखा स्पष्ट है। सीता-परित्याग के तीन प्रमुख कारण माने गये हैं और तीनों कारणों में क्रमिक विकास भी देखा जा सकता है। अनेक रचनाओं में सीताचरित पर राम के सन्देह का उल्लेख किया गया है। इस शंका को युक्तिसंगत बना देने के लिए रावण के चित्र के कथा की कल्पना की गई है।

[23] श्रीरामकीर्तिमहाकाव्यम् २०/४७.

सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची

1. शास्त्री, आचार्य सत्यव्रत (लेखक), डॉ. मिथिलेश कुमारी मिश्र (अनुवादिका), 1990 ई., श्रीरामकीर्ति-महाकाव्यम्, मूलामल्ल सचदेव और अमरनाथ सचदेव फाउन्डेशन, बैंकाक.
2. महाराज, स्वामी करपात्री जी (लेखक), सप्तम संस्करण, मई 2015 ई., रामायणमीमांसा, राधाकृष्ण धानुका प्रकाशन संस्थान, रमण रेती, वृन्दावन, मथुरा.
3. फादर, कामिल बुल्के (लेखक), 1950 ई., रामकथा उत्पत्ति और विकास, हिन्दी परिषद् प्रयाग विश्वविद्यालय, इलहाबाद.
4. व्यास, रामकृष्ण (सम्पादक), प्रथम संस्करण 1992 ई., वाल्मीकिरामायण, ओरियण्टल इन्स्टीट्यूट, बड़ौदा.
5. कालिदास (लेखक), मिश्र, पं. श्रीब्रह्मशंकर (अनुवादक), रघुवंशमहाकाव्य, चौखम्भा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी.
6. भवभूति (लेखक), त्रिपाठी, डॉ. रमाशंकर (अनुवादक), 2009 ई., उत्तररामचरित, चौखम्भा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी.
7. दिङ्नाग (लेखक), शास्त्री, श्रीजगदीश (अनुवादक), 1983 ई., कुन्दमाला, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी.
8. विमलसूरि (लेखक), जेकोबी, डॉ. हर्मन (अनुवादक), प्रथम संस्करण सं. 2068, पउमचरियं (संस्कृत छाया सह), भाग 4, आ. ओमकारसूरी आराधना भवन ज्ञानमन्दिर, गोपीपुरा, सुरत.
9. आचार्य, श्रीमद्रविषेण (लेखक), वि. सं. 1985, पद्मचरित (पद्मपुराण) तृतीय खण्ड, माणिकचन्द्र दिगम्बर जैनग्रन्थमाला समिति, हीराबाग, पो. गिरगाँव, मुम्बई.
10. सोमदेव (लेखक), शर्मा, पं. केदारनाथ सारस्वत (अनुवादक), द्वितीय संस्करण 1979 ई., कथासरित्सागर, द्वितीय खण्ड, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् पटना.
11. जैन, श्री बलभद्र जी (सम्पादक), 1987 ई., जैन रामायण, सूरजमल जैन सुशीला सदन, प्रेमपुरी, मुजफ्फरनगर, उ. प्र.
12. जैन, डॉ. रमेशचन्द्र (लेखक), 1983 ई., पद्मचरित में प्रतिपादित भारतीय संस्कृति, श्रीभारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा, कोठारी भवन 30/31, नई धानमण्डी कोटा राजस्थान.